

主编

徐生

四
库
全
书

远方出版社

文白对照

四 库 全 书

第七十八卷

主编 徐 生

远方出版社

四库全书

主 编:徐 生

出版发行:远方出版社

社 址:呼和浩特市乌兰察布东路 666 号

邮 编:010010

经 销:新华书店

印 刷:北京市新兴印务有限公司

开 本:850 × 1168 1/32

字 数:3600 千字

印 张:350

版 次:2008 年 1 月第 2 版

印 次:2008 年 1 月第 1 次印刷

标准书号:ISBN 978 - 7 - 80595 - 535 - 3

定 价:2580.00 元(全 100 册)

目 录

孔 子

| | |
|---------|------|
| 相鲁第一 | (3) |
| 始诛第二 | (4) |
| 王言解第三 | (5) |
| 大婚解第四 | (7) |
| 儒行解第五 | (9) |
| 问礼第六 | (11) |
| 五仪解第七 | (12) |
| 致思第八 | (15) |
| 三恕第九 | (19) |
| 好生第十 | (21) |
| 观周第十一 | (24) |
| 弟子行第十二 | (26) |
| 贤君第十三 | (28) |
| 辨政第十四 | (31) |
| 六本第十五 | (33) |
| 辩物第十六 | (37) |
| 哀公问政第十七 | (40) |
| 颜回第十八 | (42) |
| 子路初见第十九 | (44) |
| 在厄第二十 | (46) |

◆ 四库全书

| | |
|------------|------|
| 入官第二十一 | (48) |
| 困誓第二十二 | (50) |
| 五帝德第二十三 | (52) |
| 五帝第二十四 | (54) |
| 执辔第二十五 | (55) |
| 本命解第二十六 | (58) |
| 论礼第二十七 | (59) |
| 观乡射第二十八 | (61) |
| 郊问第二十九 | (63) |
| 五刑解第三十 | (64) |
| 刑政第三十一 | (65) |
| 礼运第三十二 | (67) |
| 冠颂第三十三 | (70) |
| 庙制第三十四 | (71) |
| 辨乐解第三十五 | (72) |
| 问玉第三十六 | (74) |
| 屈节解第三十七 | (75) |
| 七十二弟子解第三十八 | (78) |
| 本姓解第三十九 | (82) |
| 终纪解第四十 | (83) |
| 政论解第四十一 | (84) |
| 曲礼子贡问第四十二 | (90) |
| 曲礼子夏问第四十三 | (94) |
| 曲礼公西赤问第四十四 | (99) |

荀 子

| | |
|-----|-------|
| 荀子序 | (103) |
| 卷第一 | (104) |

| | | |
|------|-------|-------|
| 卷第二 | | (111) |
| 卷第三 | | (120) |
| 卷第四 | | (131) |
| 卷第五 | | (139) |
| 卷第六 | | (147) |
| 卷第七 | | (155) |
| 卷第八 | | (164) |
| 卷第九 | | (171) |
| 卷第十 | | (176) |
| 卷第十一 | | (183) |
| 卷第十二 | | (192) |
| 卷第十三 | | (200) |
| 卷第十四 | | (208) |
| 卷第十五 | | (211) |
| 卷第十六 | | (217) |
| 卷第十七 | | (223) |
| 卷第十八 | | (231) |
| 卷第十九 | | (237) |
| 卷第二十 | | (246) |

庄 子

| | | |
|-------|-------|-------|
| 庄子·内篇 | | (259) |
| 庄子·外篇 | | (289) |
| 庄子·杂篇 | | (348) |

韩 非 子

| | |
|----------|-------|
| 宋乾道黄三八郎序 | (395) |
| 初见秦 | (396) |
| 存 韩 | (398) |
| 难 言 | (401) |
| 爱 臣 | (402) |
| 主 道 | (403) |
| 有 度 | (405) |
| 二 柄 | (407) |
| 扬 权 | (409) |
| 八 奸 | (411) |
| 十 过 | (413) |
| 孤 憎 | (420) |
| 说 难 | (422) |
| 和 氏 | (424) |
| 奸劫弑臣 | (425) |
| 亡 征 | (430) |
| 三 守 | (432) |
| 备 内 | (433) |
| 南 面 | (434) |
| 饰 邪 | (436) |
| 解 老 | (439) |
| 喻 老 | (448) |
| 说 林 上 | (452) |
| 说 林 下 | (457) |
| 观 行 | (462) |
| 安 危 | (462) |
| 守 道 | (464) |

| | |
|-------------------|-------|
| 用 人 | (465) |
| 功 名 | (467) |
| 大 体 | (468) |
| 内 储 说 上 七 术 | (469) |
| 内 储 说 下 六 微 | (478) |
| 外 储 说 左 上 | (487) |
| 外 储 说 左 下 | (498) |
| 外 储 说 右 上 | (505) |
| 外 储 说 右 下 | (514) |
| 难 一 | (522) |
| 难 二 | (528) |
| 难 三 | (532) |
| 难 四 | (538) |
| 难 势 | (541) |
| 问 辩 | (543) |
| 问 田 | (544) |
| 定 法 | (545) |
| 说 疑 | (546) |
| 诡 使 | (550) |
| 六 反 | (552) |
| 八 说 | (555) |
| 八 经 | (558) |
| 五 蠲 | (562) |
| 显 学 | (568) |
| 忠 孝 | (571) |
| 人 主 | (574) |
| 饬 令 | (575) |
| 心 度 | (576) |
| 制 分 | (577) |

容斋随笔

| | |
|-----|-------|
| 卷一 | (582) |
| 卷二 | (591) |
| 卷三 | (599) |
| 卷四 | (608) |
| 卷五 | (616) |
| 卷六 | (624) |
| 卷七 | (631) |
| 卷八 | (639) |
| 卷九 | (647) |
| 卷十 | (656) |
| 卷十一 | (664) |
| 卷十二 | (671) |
| 卷十三 | (680) |
| 卷十四 | (687) |
| 卷十五 | (695) |
| 卷十六 | (704) |

容斋顺笔

| | |
|----|-------|
| 卷一 | (714) |
| 卷二 | (722) |
| 卷三 | (730) |
| 卷四 | (738) |
| 卷五 | (747) |
| 卷六 | (755) |
| 卷七 | (762) |

目 录 ◆

| | |
|-----|-------|
| 卷 八 | (770) |
| 卷 九 | (778) |
| 卷 十 | (786) |
| 卷十一 | (794) |
| 卷十二 | (802) |
| 卷十三 | (810) |
| 卷十四 | (818) |
| 卷十五 | (826) |
| 卷十六 | (835) |

孙子兵法

| | |
|--------|-------|
| 计篇第一 | (845) |
| 作战篇第二 | (848) |
| 谋攻篇第三 | (851) |
| 形篇第四 | (854) |
| 势篇第五 | (857) |
| 虚实篇第六 | (860) |
| 军争篇第七 | (864) |
| 九变篇第八 | (868) |
| 行军篇第九 | (870) |
| 地形篇第十 | (874) |
| 九地篇第十一 | (878) |
| 火攻篇第十二 | (885) |
| 用间篇第十三 | (888) |

老 子

| | |
|-----|-------|
| 一 章 | (895) |
|-----|-------|

◆ 四库全书

| | | |
|------|-------|-------|
| 二 章 | | (895) |
| 三 章 | | (895) |
| 四 章 | | (896) |
| 五 章 | | (896) |
| 六 章 | | (897) |
| 七 章 | | (897) |
| 八 章 | | (898) |
| 九 章 | | (898) |
| 十 章 | | (898) |
| 十一章 | | (899) |
| 十二章 | | (899) |
| 十三章 | | (900) |
| 十四章 | | (900) |
| 十五章 | | (901) |
| 十六章 | | (901) |
| 十七章 | | (902) |
| 十八章 | | (902) |
| 十九章 | | (903) |
| 二十章 | | (903) |
| 二十一章 | | (904) |
| 二十二章 | | (904) |
| 二十三章 | | (905) |
| 二十四章 | | (905) |
| 二十五章 | | (906) |
| 二十六章 | | (906) |
| 二十七章 | | (907) |
| 二十八章 | | (907) |
| 二十九章 | | (908) |
| 三十章 | | (908) |
| 三十一章 | | (909) |
| 三十二章 | | (909) |

目 录



| | | |
|------|-------|-------|
| 三十三章 | | (910) |
| 三十四章 | | (910) |
| 三十五章 | | (910) |
| 三十六章 | | (911) |
| 三十七章 | | (911) |
| 三十八章 | | (912) |
| 三十九章 | | (912) |
| 四十章 | | (913) |
| 四十一章 | | (913) |
| 四十二章 | | (914) |
| 四十三章 | | (914) |
| 四十四章 | | (914) |
| 四十五章 | | (915) |
| 四十六章 | | (915) |
| 四十七章 | | (916) |
| 四十八章 | | (916) |
| 四十九章 | | (916) |
| 五十章 | | (917) |
| 五十一章 | | (917) |
| 五十二章 | | (918) |
| 五十三章 | | (918) |
| 五十四章 | | (918) |
| 五十五章 | | (919) |
| 五十六章 | | (919) |
| 五十七章 | | (920) |
| 五十八章 | | (920) |
| 五十九章 | | (921) |
| 六十章 | | (921) |
| 六十一章 | | (921) |
| 六十二章 | | (922) |
| 六十三章 | | (922) |

| | |
|------|-------|
| 六十四章 | (923) |
| 六十五章 | (923) |
| 六十六章 | (924) |
| 六十七章 | (924) |
| 六十八章 | (925) |
| 六十九章 | (925) |
| 七十章 | (925) |
| 七十一章 | (926) |
| 七十二章 | (926) |
| 七十三章 | (926) |
| 七十四章 | (927) |
| 七十五章 | (927) |
| 七十六章 | (928) |
| 七十七章 | (928) |
| 七十八章 | (928) |
| 七十九章 | (929) |
| 八十章 | (929) |
| 八十一章 | (930) |

梦溪笔谈

| | |
|--------|--------|
| 卷一 故事一 | (933) |
| 卷二 故事二 | (950) |
| 卷三 辨证一 | (957) |
| 卷四 辨证二 | (975) |
| 卷五 乐律一 | (983) |
| 卷六 乐律二 | (1013) |
| 卷七 象数一 | (1018) |
| 卷八 象数二 | (1030) |
| 卷九 人事一 | (1038) |

目 录 ◆

| | |
|----------|--------|
| 卷十 人事二 | (1065) |
| 卷十一 官政一 | (1070) |
| 卷十二 官政二 | (1089) |
| 卷十三 权智 | (1101) |
| 卷十四 艺文一 | (1118) |
| 卷十五 艺文二 | (1129) |
| 卷十六 艺文三 | (1138) |
| 卷十七 书画 | (1141) |
| 卷十八 技艺 | (1151) |
| 卷十九 神奇 | (1172) |
| 卷二十 异事 | (1191) |
| 卷二十一 谬误 | (1212) |
| 卷二十二 讥谑 | (1220) |
| 卷二十三 杂志一 | (1230) |
| 卷二十四 杂志二 | (1250) |
| 卷二十五 药议 | (1276) |

淮 南 子

| | |
|-----|--------|
| 原道训 | (1295) |
| 天文训 | (1329) |
| 地形训 | (1375) |
| 时则训 | (1394) |
| 精神训 | (1426) |
| 本经训 | (1449) |
| 主术训 | (1469) |
| 缪称训 | (1523) |
| 道应训 | (1560) |
| 说林训 | (1606) |

孔

子



相鲁第一

【原文】

孔子初仕，为中都宰，制为养生送死之节：长幼异食，强弱异任，男女别涂，路无拾遗，器不雕伪，为四寸之棺，五寸之椁，因丘陵为坟，不封不树。行之一年，而四方之诸侯则焉。定公谓孔子曰：“学子此法以治鲁国，何如？”孔子对曰：“虽天下可乎，何但鲁国而已哉！”于是二年，定公以为司空。乃别五土之性，而物各得其所生之宜，咸得厥所。先时季氏葬昭公于墓道之南。孔子沟而合诸墓焉。谓季桓子曰：“贬君以彰己罪，非礼也。今合之，所以掩夫子之不臣。”由司空为鲁大司寇，设法而不用，无奸民。

定公与齐侯会于夹谷，孔子摄相事，曰：“臣闻有文事者必有武备，有武事者必有文备。古者诸侯并出疆，必具官以从，请具左右司马。”定公从之。至会所，为坛位，土阶三等，以遇礼相见，揖让而登。献酢既毕，齐使莱人以兵鼓噪，劫定公。孔子历阶而进，以公退，曰：“士，以兵之。吾两君为好，裔夷之俘敢以兵乱之，非齐君所以命诸侯也。裔不谋夏，夷不乱华，俘不干盟，兵不逼好，于神为不详，于德为僭义，于人为失礼，君必不然。”齐侯心怍，麾而避之，有顷，齐奏宫中之乐，俳优侏儒戏于前。孔子趋进，历阶而上，不尽一等，曰：“匹无荧侮诸侯，罪应诛，请右司马速刑焉。”于是斩侏儒，手足异处。齐侯惧，有惭色。将盟，齐人加载书曰：“齐师出境，而不以兵车三百乘从我者，有如此盟。”孔子使兹无还对曰：“而不返我汶阳之田，吾以供命者亦如之，齐侯将设享礼，孔子谓梁丘据曰：“齐鲁之故，吾子何不闻焉？事既成矣，而又享之，是勤执事。且牺象不出门，嘉乐不野合，享而既具，是弃礼。若其不具，是用秕稗。用秕稗，君辱；弃礼，名恶。子盍图之？夫享，所以昭德也。不昭，不如其已。”乃不果享。齐侯归，责其群臣曰：“鲁以君子之道辅其君，而子独以夷狄之道教寡人，使得罪。”于是乃归所侵鲁之四邑及汶阳之田。